बाजार संरचना (MARKET STRUCTURE)

बाजार संरचना

बाजार के वह विशिष्ट स्वरूप है जिनमें किसी वस्तु अथवा सेवा का उत्पादन क्रय तथा विक्रय किया जाता है।

बाजार संरचना के अंतर्गत सम्मिलित किए जाने वाले यह विशिष्ट रूप मूलत: उस बाजार में विद्यमान प्रतियोगिता या प्रतिस्पर्धा की मात्रा ऊपर आधारित होती है।

बाजार संरचना:-

पूर्ण प्रतियोगिता, एकाधिकृत प्रतियोगिता, अल्पाधिकार, एकाधिकार जैसे विशिष्ट प्रतिस्पर्धात्मक बाजार संरचनाओं या स्वरूपों को सम्मानित किया है।

बाजार का अर्थ (Meaning of Market)

साधारण भाषा में:

बाजार का अर्थ स्थान से लिया जाता है, जहाँ वस्तु के क्रेता और विक्रेता भौतिक रूप में एक साथ एकत्रित होकर वस्तुओं और सेवाओं का क्रय विक्रय करते हैं।

अर्थशास्त्र में

अर्थशास्त्र में बाजार शब्द का अभिप्राय उस संपूर्ण क्षेत्र से है जहाँ वस्तु - विशेष के क्रेता एवं विक्रेता आपस में प्रतिस्पर्धा करके उस क्षेत्र भर के लिए वस्तु की कीमत स्थापित कर देते है।

बाजार की परिभाषाएं

सिजविक के अनुसार

"बाजार मनुष्य का एक ऐसा समूह है जिसमें इस प्रकार के वाणिज्यिक संबंध स्थापित हुए हों कि प्रत्येक को सुगमतापूर्वक ही पता चल जाए कि अन्य व्यक्ति समय समय पर कुछ वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय किन कीमतों पर करते हैं।"

क्रुनो के अनुसार

बाजार कोई ऐसा स्थान नहीं है जहाँ वस्तुओं का क्रय विक्रय होता हो वरन ऐसा क्षेत्र है जहाँ विक्रेताओं और ग्राहकों के मध्य परस्पर का स्वतंत्र संपर्क हो कि एक वस्तु की कीमतों में सुगमता तथा शीघ्रता से समानता होने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाये।

जेवंस के अनुसार

बाजार शब्द से तात्पर्य व्यक्ति के किसी समूह से हैं जिनमें व्यापारिक संबंध होते हैं और जो किसी वस्तु में मिश्रित व्यवसाय करते हैं।

बाजार की विशेषताएँ/ तत्व

एक क्षेत्र: बाजार शब्द का अर्थ उस समय क्षेत्र से होता है जिसमें क्रेता और विक्रेता फैले हुए होते हैं।

क्रेताओं और विक्रेताओं की उपस्थिति

एक निश्चित वस्तु

वस्तु का एक निश्चित मूल्य

स्वतंत्र प्रतियोगिता

बाजार संरचना का वर्गीकरण (Classification of Market Structure)

क्षेत्र के अनुसार वर्गीकरण

स्थानीय बाजार

जब किसी वस्तु का विनिमय उसके क्रेता और विक्रेताओं द्वारा स्थान विशेष तक ही सीमित होता है तो उस पस्तु का स्थानीय बाजार कहलाता है ये बाजार प्रयास ऐसी वस्तुओं के होते हैं जो-

- ❖शीघ्र नष्ट होने वाली होती है
- ❖अधिक भारी होते हुए भी कम मूल्यवान होते हैं
- ❖स्थान में रहने वाली जाति के उपभोग में ही आती है

प्रांतीय बाजार

जिन वस्तुओं की खरीद बिक्री दूसरे राज्य या प्रांत में होती है उन वस्तुओं का प्रांतीय बाजार कहलाता है

राष्ट्रीय बाजार

जब किसी वस्तु का क्रय विक्रय किसी स्थान प्रांत या राज्य तक सीमित न होकर देशव्यापी होता है अर्थात उसके क्रेतागण विक्रेता देश भर में फैल होते हैं

अंतर्राष्ट्रीय बाजार

यदि किसी वस्तु का क्रय- विक्रय विश्व के विभिन्न भागों में किया जाता है और उसके क्रेता विक्रेता संपूर्ण विश्व में पाए जाते हैं तो उस वस्तु का बाजार अंतर्राष्ट्रीय बाजार कहलाता है।

समय के अनुसार वर्गीकरण

दैनिक/ अतिअल्पकालीन बाजार

बाजार जिसने विक्रेताओं को वस्तु की पूर्ति बढ़ाने का समय नहीं मिल पाता है।

अल्पकालीन बाजार

ऐसे बाजार जिसमें दैनिक बाजार की अपेक्षा वस्तु पूर्ति में वृद्धि कुछ सीमा तक ही की जा सकती है। पूर्ति को मांग के अनुपात में नहीं बढाया जा सकता है।

दीर्घकालीन बाजार

दीर्घकालीन बाजार की अवधि इतनी लंबी होती है की मांग के घटने पर उत्पादक वस्तुओं की पूर्ति कम और मांग के बढ़ने पर वस्तुओं की पूर्ति बढ़ा सकता है।

अतिदीर्घकालीन बाजार

इस बाजार में अवधि इतनी लंबी होती है कि उत्पादक उपभोक्ता के स्वभाव, रुचि और फैशन के अनुसार वस्तु बना सकता है। नए नए उद्योग धंधे स्थापित हो सकते हैं और वस्त्रों का उत्पादन किसी भी सीमा तक बढ़ाया जा सकता है।

बिक्री की प्रक्रिया के अनुसार वर्गीकरण

निरीक्षण द्वारा बेची जाने वाली वस्तु का बिक्री बाजार

गाय, घोडा, बकरी आदि का क्रय विक्रय

प्रमाणीकृत वस्तुओं का नमूने द्वारा बिक्री बाजार

साबुन, पाउडर, क्रीम आदि

ग्रेडिंग द्वारा वस्तुओं का बिक्री बाजार

A Garde चावल, B Grade चावल

ट्रेडमार्क द्वारा बिक्री का बाजार

गुरुपद बीडी, मुर्गा छाप पटाखे

विशिष्टीकरण के आधार पर वर्गीकरण

मिश्रित बाजार

जहाँ विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का एक साथ क्रय विक्रय किया जाता है

विशिष्ट बाजार

जहाँ किसी एक या विशिष्ट वस्तु का ही क्रय विक्रय किया जाता है जैसे सर्राफा बाजार कार बाजार आदि

बिक्री की मात्रा के अनुसार वर्गीकरण

फुटकर बाजार

जिसमे थोड़ी मात्रा में वस्तुओं की खरीदी या बेची जाती हैं

थोक बाजार

जिसमें थोक मात्रा में वस्तुओं और सेवाओं को बेची जाती हैं

वैधानिकता के आधार पर

वैध बाजार

जब बाजार में बस्तु का क्रय विक्रय सरकारी नियमों एवं कानून के अनुसार किया जाता है और व्यक्तियों को उचित मूल्य प्राप्त होती है

अवैध बाजार

इस जब किसी वस्तु के विक्रेता निश्चित मूल से अधिक पर बेचते या फिर ज्ञान का कानूनी रूप से वस्तुओं का क्रय विक्रय करते हैं तो से अवैध या चोर बाजार कहते हैं

प्रतियोगिता के अनुसार बाजार

- पूर्ण प्रतियोगिता बाजार
- अपूर्ण प्रतियोगिता बाजार
  - द्विधिकारी (Deopoly)
  - अल्पाधिकार (Oligopoly)
  - एकाधिकृत प्रतियोगिता
- एकाधिकार बाजार

पूर्ण प्रतियोगिता (Perfect Competition Market)

बाजार की स्थिति जिसमें एक समान वस्तु के *बहुत अधिक क्रेता एवं विक्रेता* होते हैं। एक क्रेता तथा एक विक्रेता बाजार की कीमत को प्रभावित नहीं कर पाते और यही कारण है कि पूर्ण प्रतियोगिता में बाजार ने *वस्तु की एक ही कीमत* प्रचलित रहती है।

पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएँ

- क्रेताओं और विक्रेताओं की अधिक संख्या
- वस्तु की समरूप इकाईयां
- फर्मो के प्रवेश व निष्कासन की पूर्ण स्वतंत्रता
- क्रेताओं और विक्रेताओं को बाजार की दशाओं का पूर्ण ज्ञान
- उत्पत्ति के साधनों की पूर्ण गतिशीलता बनी रहती है
- कोई यातायात लागत नहीं रहती

अपूर्ण प्रतियोगिता (Imperfect Competition Market)

- वह बाजार जिसमें पूर्ण प्रतियोगिता का अभाव रहता है
- क्रेताओं और विक्रेताओं की संख्या कम होती है
- क्रेता और विक्रेता को बाजार के बारे में पूर्ण ज्ञान नहीं होता
- एक ही वस्तु का एक समय में एक से अधिक मूल्य पर चलित रहता है

अपूर्ण प्रतियोगिता के भेद

द्विधिकारी (Deopoly)

ऐसे बाजार स्थिति जिसमे वस्तु के केवल दो ही उत्पादक होते हैं और दोनों ही एक प्रकार के एक ही वस्तु को बेचते हैं दोनों उत्पादको की वस्तु समरूप होती है दोनों ही अपने उत्पादन कार्य में स्वतंत्र होते हैं दोनों वस्तुएं एक दूसरे से प्रतियोगिता करती है

अल्पाधिकार बाजार (Oligopoly)

यदि किसी वस्तु की कुल पूर्ति कुछ फर्में या कुछ व्यक्तियों के द्वारा की जाती है तो उसे अल्पाधिकार की स्थिति कहते हैं। इस अवस्था में विक्रेताओं की संख्या बहुत कम होती है, इस कारण से वे वस्तुओं की पूर्ति और उसकी कीमत के प्रति सजग रहते हैं। इसका कारण है कि एक विक्रेता की व्यवसायिक नीति का प्रभाव दूसरे विक्रेता पर प्रभाव होता है।

अल्पाधिकार दो प्रकार के होते हैं

वस्तु विभेद सहित अल्पाधिकार

इसमें एक दूसरे की निकटवर्ती स्थान कुछ भी वैधीकृत वस्तुओं का उत्पादन करने वाले कुछ फर्मों के मध्य प्रतिस्पर्धा पाई जाती है। इस बाजार संरचना के अंतर्गत व्यक्तिगत फर्म का मांग वक्र नीचे की ओर गिरता हुआ होता है इसके अंतर्गत फर्म अपने व्यक्तिगत वस्तुओं की कीमत पर नियंत्रण रखती है

वस्तु विभेद रहित अल्पाधिकार

इस बाजार संरचना के अंतर्गत समरूप वस्तु का उत्पादन करने वाले कुछ फर्मों के मध्य प्रतिस्पर्धा होती है। फर्मो की कमी यह सुनिश्चित करते हैं कि उनमें से प्रत्येक वस्तुओं की कीमतों में कुछ अंश तक नियंत्रण होगा तथा प्रत्येक फर्म की मांग वक्र नीचे की ओर गिरता हुआ होगा जो इस बात का संकेतक होगा कि प्रत्येक फर्म की मांग की कीमत लोच अनंत नहीं होगी

एकाधिकारी प्रतियोगिता बाजार (Monopolistic Competition Market)

यह बाजार *पूर्ण प्रतियोगिता तथा एकाधिकार का मिश्रित रूप* होता है। वास्तविक जगत में एकाधिकारी प्रतियोगिता बाजार ही प्रचलन में है।

इस बाजार दशा में समूह के उत्पादक *विभेदीकृत वस्तुओं* का उत्पादन करते हैं जो एक समान या समरूप नहीं होता, किंतु *निकटतम स्थानापन्न* अवश्य होता है।

एकाधिकारी प्रतियोगिता की विशेषताएँ

- विक्रेताओं की संख्या अधिक होना
- विभेदीकृत वस्तुओं का उत्पादन
- प्रतिबंधित प्रवेश एवं बहिर्गमन
- विक्रय लागत अधिक होना
- बाजार का अपूर्ण ज्ञान
- गैर कीमत प्रतियोगिता का पाया जाना
- फर्म की कीमत नीति

एकाधिकार बाजार (Monopoly)

एकाधिकार दो शब्दों से मिलकर बना है- ***एक*** और ***अधिकार*** ।

बाजार की वह स्थिति जब बाजार ने वस्तु का *केवल एकमात्र विक्रेता* हो।

एकाधिकारी बाजार दशा में वस्तु का एक अकेला बिक्रेता होने के कारण विक्रेता का *वस्तु की पूर्ति पर पूर्ण नियंत्रण* रहता है।

प्रो. मैककोनल के अनुसार, "एकाधिकार की स्थिति उस समय होती है, जब एक अकेली फर्म एक वस्तु का एकमात्र उत्पादक होती है जिसका कोई स्थानापन्न नहीं होता"

एकाधिकार की विशेषताएँ

- एक विक्रेता और अधिक क्रेता
- वस्तु के निकट स्थानापन्न का अभाव
- एकाधिकारी स्वयं कीमत निर्धारक
- नई फर्मों का प्रवेश पूर्णता प्रतिबंधित
- मांग वक्र का ऋणात्मक ढाल
- कीमत विभेद की संभावना

LIKE & SHARE

The Video

And

SUBSCRBE

YouTube CHANNEL

THE ECONOMICS GURU

FOLLOW ME ON *INSTAGRAM* / @theeconomicsguru

FOLLOW ME ON *FACEBOOK* / NAKUL DHALI

For PDF visit my website: www.theeconomicsguru.com